RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 7 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 24 जुलाई 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तराखण्ड पर आसमानी आफत का खतरा

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

मानसून सत्र हिमालयी गाँवों के लिए आफत बनकर आता है। लगभग तीन माह सड़क, रास्ते, बिजली, पानी, संचार का संकट बना रहता है। आपदाग्रस्त गाँवों का हाल सबसे बुरा है। वहाँ लोग रात को जागकर आसमान ताकते हैं। वर्षा होते ही सिहर उठते हैं। हालांकि आपदाग्रस्त 25 गाँवों के परिवारों की सूची जिला प्रशासन ने तैयार की है। लेकिन उनके पुनर्वास को लेकर अब तक ऐतिहासिक कदम नहीं उठ सके हैं। रसात का मौसम है और इन दो ढाई महीनों में उत्तराखण्ड के पहाड़ों में आफत बरसती है और ये आपदा प्रदेश बन जाता है। हर साल आपदाग्रस्त और भुतहा गाँवों की संख्या बढ़ रही है। यात्रा के लिए यहाँ आने वाले लोग ही नहीं यहाँ के मूल निवासी भी इन दिनों पहाड़ चढ़ने से परहेज करते हैं। कच्चे पैदल मार्ग भी टूट जाने से मरीजों को अस्पताल तक ले जाना मुश्किल है। कोई महिला कई मील चल कर अस्पताल के रास्ते में बच्चे को जन्म दे रही है तो कई घायल और बीमार वहाँ तक जाने के लिए सांसे नहीं बचा पा रहे हैं। खतरे की जद में आने के बाद लोग घर गाँव छोड़ कर राहत शिविरों में रह रहे हैं तो कई हजार की आबादी सड़के टूट जाने से अपने इलाके में बंधी सी है। कुल मिलाकर कभी जिस पहाड़ की हरियाली बरसात में देखते ही बनती थी अब बरसात उससे मोहभंग होने की सीजन बन गया है। उत्तराखण्ड प्राकृतिक आपदाओं की दृष्टि से अति सम्वेदनशील राज्य है। राज्य गठन के 23 वर्षों में आपदाओं ने भी राजनीति को धार दी। जब-जब राज्य पर आपदाओं ने कहर बरपाया, राजनीतिक दलों ने इसे एक-दूसरे पर निशाना साधने के लिए हथियार बनाया। लेकिन राज्य के लिए नासूर बन चुकी इन आपदाओं के जख्मों का मरहम तलाशने के लिए कभी भी किसी राजनीतिक दल ने चुनावी मुद्दा नहीं बनाया। राज्य गठन के बाद से इस मुद्दे पर राजनीति भी खूब हुई। कई बार आपदाएं सियासत में वार-पलटवार का हथियार बनीं। सड़क से लेकर विधानसभा के पटल पर इसे लेकर बहस भी होती रही। राजनीतिक दल सवाल तो उठाते रहे, लेकिन जवाब किसी के पास नहीं है। राजनीतिक दलों के स्तर पर इन आपदाओं से निपटने, इनकी मारकता को कम करने, इनके न्यूनीकरण के सम्बन्ध में आज तक कोई ठोस रणनीति नहीं बनी। उत्तराखण्ड को देश में ऐसे राज्य का दर्जा प्राप्त है, जिसने पहली बार अपने राज्य में वर्ष 2005 में आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण, आपदा प्रबन्धन एवं पुनर्वास विभाग का गठन किया है। इस विभाग के गठन के बाद आपदाओं के न्यूनीकरण और उससे निपटने के इन्तजामों में बढ़ोतरी हुई है, लेकिन हालात अभी भी बहुत अच्छे नहीं हैं। हम जिस प्रदेश में रहते हैं, उसकी प्रकृति अलग तरह की है। हम आपदाओं के साथ जीते हैं, लेकिन राजनीतिक पार्टियां पर्यावरण के महत्व को नहीं समझ पा रही हैं। लोग भी संजीदा नहीं हैं। आपदा से पीड़ित लोग ही चुनाव के समय ऐसे मुद्दों से मुंह फेर लेते हैं। जबकि उनके लिए वही सबसे बड़ा मुद्दा होना चाहिए। दूसरा यह भी देखने को मिलता है कि जिस क्षेत्र में आपदा आती है, वहाँ के लोग तो इस मुद्दे को उठाते हैं, लेकिन दूसरे क्षेत्रों के लोगों के लिए यह मुद्दा नहीं रहता। जबकि सभी लोगों को इस मुद्दे पर राजनीतिक पार्टियों को साधने का काम करना चाहिए। दबाव बनाना चाहिए कि वह अपने घोषणापत्र में क्षेत्र विशेष ही सही, आपदा से पीड़ित लोगों, पुनर्वास और इसके न्यूनीकरण के लिए क्या काम करेंगे। आमतौर पर राजनीतिक दल मानते हैं कि चुनाव धर्म, जाति, भाषा, प्रांत जैसे मुद्दों पर जीत जाते हैं। पैसे बांटने और तमाम तरह के प्रलोभन भी दिए जाते हैं। लेकिन पिछले कुछ सालों में तस्वीर बदली है। जनता मतदान के समय अब मुद्दों पर बात करना पसंद करती है। उत्तराखंड में महंगाई, सुरक्षा व्यवस्था, सुशासन, दैनिक जीवन की कठिनाइयों के साथ प्राकृतिक आपदाएं भी एक बड़ा मुद्दा है। इसलिए राजनीतिक पार्टियां चाहकर भी इससे भाग नहीं सकती हैं। जनता मूक भले ही हो, पर बु)हीन नहीं होती। जलवायु परिवर्तन का नजारा भी देख लिया। इसके बाद भी किसी भी राजनीतिक दल के एजेंडे में जलवायु परिवर्तन को लेकर, राज्य के पर्यावरण संरक्षण को लेकर नीतिगत रूप से कोई बिंदु न होना दुर्भाग्यपूर्ण है। अब भी समय है, जब राजनीतिक दलों को इस विषय में गंभीरता से सोचना चाहिए।विडम्बना यह है इस ओर हमारे दायित्व के प्रति हम सबने आंखें मूंद रखी हैं

लोहाली पर खतरा बना हुआ है, हैड़ाखान मार्ग भी समय लेगा

कार्यालय प्रतिनिधि

नैनीताल/हल्द्वानी। भवाली-अल्मोड़ा हाईवे पर लोहाली के पास कच्ची पहाड़ी से रुक-रुक कर मलबा गिर रहा है, ऐसे में यातायात के लिये खतरा बना हुआ है। प्रशासन की ओर से मलबा हटाने के लिये तैनाती की गई और गिर रहे मलबे-बोल्डर हटाते हुए यातायात सुचारु किया जा रहा है। इस स्थान पर अभी काफी मलबा गिरने को तैयार है, ऐसे में यात्री व वाहन चालक सकर्त रहें।

इसी प्रकार रानीबाग से आगे हैड़खान रोड के हालात एकदम दलदल जैसे बने हुए हैं। बरसात के चलते पूरे मार्ग पर वाहनों के फंसने का खतरा बना हुआ है। कई बार वाहनों को क्रेन की मदद से पार किया गया। बताते चलें कि इस बन्द पड़े मार्ग को खुलवाने के लिये विधायक राम सिंह कैड़ा के प्रयास सफल हो गये थे लेकिन दलदल-कीचड़ बने मार्ग पर खतरा देखते हुए लोनिवि के अधिकारियों के अलावा पुलिस तैनात करनी पड़ी है।

हरड़िया में दिक्कत, तेजम में झूलापुल भी नहीं बन सका है

पि.हि. प्रतिनिधि

थल-मुनस्यारी रोड पर हरडिया में हमेशा मानसून काल में भूस्खलन होता है, जिससे यातायात सहित तमाम परेशानियां होती हैं। नाचनी से लेकर टिमटिया तक के क्षेत्र में प्रतिवर्ष लोगों को आपदा के इस कारण को भुगतना पड़ रहा है। मल्ला जोहार समिति ने यहाँ सर्वे कर अन्य सुविधा मार्ग निर्माण करने की मांग की है।

बताते चलें कि नाचनी में जो झूलापुल आपदा में बह गया था, वह भी आज तक नहीं बना है। ऐसे में नदी पार वाला क्षेत्र से सर्वे करके जो तेजम के पास झूला पुल बना है उससे जोड़ा जा सकता है। तेजम के निकट पक्का आरसीसी पुल बनाया जाना जरूरी है। नाचनी और तेजम में आरसीसी का पक्का पुल होने से क्षेत्रवासियों को राहत मिलेगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

छात्र संघ कोष से पुस्तक खरीद का स्वागत

एमबीपीजी कालेज हल्द्वानी छात्र संघ कोष को लेकर छात्रसंघ पदाधिकारियों के बीच हुए घमासान के बाद आखिरकार कोष को पुस्तकालय की किताबों के लिये दान करने का निर्णय लिया गया है। छात्र संघ कोष से पुस्तक खरीद का स्वागत होना चाहिये।

अक्सर यह होता रहा है कि छात्र नेता जमा धनराशि को अपने मुताबिक व्यय करवाना चाहते हैं। यह भी देखने में आया है कि किसी समारोह के बहाने धन का अपव्यय भी होता रहा है। छात्रसंघ कोष को लेकर पदाधिकारियों के बीच विवाद होने से दो-दो समारोह भी पहले होते रहे हैं। कुछ नादान छात्र छात्रनेता बनने समय यह मान लेते हैं कि वह रुपये बनाने के लिये नेता बन चुके हैं और मनमानी करेंगे। ऐसे में अक्सर वह बाजार में भी गलती करते हैं और गालीगलौच, मारपीट, वसूली के आरोप में सजा भुगत रहे होते हैं या गलत संगत में अपना जीवन बर्बाद कर लेते हैं।

महाविद्यालयों में विभिन्न मदों में जो राशि जमा होती है उसका उपयोग उन्हीं के लिये होना चाहिये लेकिन किसी की आड़ में दबाव बनाने वालों की नीयत और नज़र इस खजाने में रहती है। यह सब ठीक नहीं है। बड़े कालेजों में छात्र संघ चुनाव में ताकत दिखाने वालों को कई गलतफहमी होती है। इससे कालेज प्रशासन भी परेशान होते हैं।

हल्द्वानी का एमबीपीजी कालेज भी बड़ी छात्र संख्या वाला है। इस कारण यहाँ विभिन्न मदों में धनराशि भी काफी ज्यादा जमा होती है। पूरी व्यवस्था संभाल के लिये कालेज प्रशासन जिम्मेदार है लेकिन छात्र संघ पदाधिकारी बनने का मतलब है वह भी अपनी बात रखेगा। अनुशासन में रहकर अपनी बात रखना अच्छी बात है लेकिन बात सिर्फ इसलिये हो कि जमा कोष का व्यय किस प्रकार से होगा या मनमर्जी होगा, गलत है। छात्र संघ कोष को लेकर इस बार भी उलझन होती रही। छात्रसंघ पदाधिकारियों ने कार्यकाल के दौरान कोष को कई बार निकालने की कोशिश की। यहाँ तक की दो पदाधिकारियों के बीच कोष को लेकर हाथापाई भी हुई। अब जबकि छात्रसंघ का कार्यकाल समाप्त हो गया, कोष तो धरा रह गया। ऐसे में यह तय हुआ कि छात्रसंघ कोष की राशि से महाविद्यालय पुस्तकालय के लिये पुस्तकें ली जाएंगी। पुस्तकालय को कोष की राशि दना देने के निर्णय की जानकारी छात्रसंघ अध्यक्ष रश्मि लमगड़िया ने दी। छात्र संघ उपाध्यक्ष गौरव सामन्त ने प्राचार्य को ज्ञापन देकर छात्रसंघ कोष को पुस्तकालय को दान करने की मांग की। प्राचार्य डॉ. एन.एस.बनकोटी ने सहमति जताई।

चलो जैसे भी हुआ पुस्तकालय को दान हुआ। यह अच्छी बात है कि छात्र हित में जमा राशि का सदुपयोग होगा। ऐसा होना ही चाहिये। चाहे कोई छात्र संघ बने, उसे छात्र हित में अपने कालेज को संवारने में योगदान देना चाहिये। कोष के लिये झगड़े का सीधा सा अर्थ गड़बड़झाला है। विद्यार्थी जीवन पढ़ने और भविष्य को संवारने के लिये है। उसे अनावश्यक दखल से बचना चाहिये।

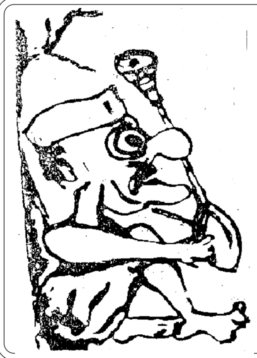

फसक

दाज्यू, क्रियेटीविटी बहुत जरूरी हो गई ठैरी

हर-हर बम-बम के साथ कईयों को भुगतना भी पड़ता है बल

दाज्यू, उमंग-तरंग तो पहाड़ की नसों में हुई। ऊपर से सारे नेता-अधिकारी भी झूमने लगें तो क्या होगा? चारों ओर रंगत आ रही है। बब्बू कह रहा है- 'अब कुछ करने को नहीं रह गया है। सब बम-बम कर रहे हैं। कोई हर-हर बोल रहा है।' दाज्यू, डीएम बागेश्वर ने बिलौना में रोपाई कर रही महिलाओं के साथ जाकर रंगत ली। डीएम ने लोक परम्परा पर बोला और फोटो भी खिंचवाए। दाज्यू, क्रियेटीविटी बहुत जरूरी हो गई ठैरी। आफिस में बैठे बैठे हाड़ भी दुखने वाले ठैरे। अधिकारी हो या कर्मचारी हवा-पानी लगते रहना चाहिये।

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के बागेश्वर और पिथौरागढ़ कैम्पस बनाने के बाद मास्साब लोगों को जिम्मेदारी भी दी जानी जरूरी थी। हमारा रफ्फन बहुत खुश है। कह रहा था- 'विभागाध्यक्ष बनने का समाचार भी छप रहा है। मौज आ रही है। समाचार में दिखाई देता रहना चाहिये।' दाज्यू, सब क्रियेटीविटी ठैरी। जिसके जो समझ आए करने दो.........लाचार जमाना मोबाइल में देखते रहता है। कुछ बेचारों का रोजगार ठैरा। मुनिया भी 'रील' बनाने लग गई है बल। दाज्यू, अच्छा हुआ डॉ.गपलू और डीडीटी सिंह उच्चशिक्षा में लग चुके हैं वर्ना उन्हें कांवड़ यात्रा में ढूंढने जाना पड़ता। हर-हर बम-बम के साथ कईयों को भुगतना भी पड़ता है बल। देखा नहीं, हरिद्वार में एक टोली ने कार में तोड़फोड़ कर डाला। गंगाजल लेने आ रहे भक्त लट्ठ लेकर पिल पड़ें तो पक्की बात कलयुग का चक्र तेजी से चल रहा है। सीएम ने कावड़ यात्रा की शुरुआत में स्वागत करते हुए चरण भी धोए, उन्हें क्या पता यात्रा में लट्ठबाज भी बम-बम कर रहे हैं।

दाज्यू, बधाई हो। अपने दीवान दा कुलपति बन गये हैं। कह रहे हैं- परीक्षा व्यवस्था पटरी में ला देंगे। उम्मीद तो करनी ही चाहिये। कल की कल देखी जायेगी। विश्वविद्यालयों में भी संभाल करना बहुत कठिन काम ठैरा महाराज।

हल्द्वानी में पार्षद रवि जोशी और मेयर डॉ.जोगेन्द्र रौतेला के बीच तनातनी है बल। नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष रवि जुवा नेता ठैरा। आरोप लगा दिया है कि मेयर साहब धमका रहे हैं। दाज्यू, जमाने में बहुत प्रकार की क्रियेटीविटी चल रही ठैरी। मेयर बेचारा फक्क। कह रहे हैं- 'मैंने किसी को नहीं धमकाया। पार्षद जोशी से कहा कि पद की गरिमा बनाए रखें। सभी को पद की गरिमा बनाए भी रखनी चाहिए।'

टनकपुर शहर के प्राचीन मुक्तेश्वर मन्दिर में घमासान मचा हुआ है। पपलू बता रहा था- 'कभी बहुत जमीन यहाँ हुई करती थी। फिर गोखरपुर से एक बाबा आए और छोटे आकार के मन्दिर को बड़ा आकार कर दिया गया। ईट-पत्थर गारा-चूना सब लगा। पिछले सालभर से मन्दिर में पुजारी और आसपास रह रहे नाथ राठों में चकचक होने लगी। अब तो मामला बहुत आगे बढ़ चुका है। दोनों पक्षों के बीच तू-तू-मैंमैं खूब हो चुकी। प्रशासन भी देख-देख कर तंग आ चुका है।' दाज्यू, जमीन-जायजाद का मामला खचर-बचर ही होने वाला ठैरा। ऊपर से छोटे से टनकपुर में पहाड़ी-देशी बनाकर भी मन्दिर की लड़ाई हो रही है बल। भोले बाबा ही जाने आगे क्या होने वाला है..........। शेष शहर खामोश सी देख रहा है और समझ भी रहा है। दाज्यू, सावन का महीना जोर मारने वाला हुआ। लोहाघाट के मीना बाजार में नशे में धुत्त युवती ने घण्टों हंगामा कर दिया। हैदराबाद में नौकरी करने वाली है बल। बड़े शहरों की बात......। क्याप्प दाज्यू। तुम भी......। सीएम धामी आपदा को देख मैदान में उतरे हैं। दाज्यू, गजब ही हो रहा कहा। भूंभाट-चूंचाट.. ....। 'मदर इण्डिया' फिल्म का गीत याद आता है- 'दुनिया में आए हैं तो जीना ही पड़ेगा।'

दाज्यू, गली-मोहल्ला सब अपडेट है बल। खटीमा में बीडीओ पर मातृत्व अवकाश के हनन का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन हुआ। सीएम को ज्ञापन भेजा गया है। खटीमा सीएम धामी का मुख्य गढ़ ठैरा, वह बात अलग है कि उपनेता प्रतिपक्ष भुवन कापड़ी भी ताव में हैं। दाज्यू, चन्द्रयान-3 चक्कर लगा रहा है। वह चाँद के रहस्यों को बताएगा। तक तक हम भी गाँव का चक्कर लगा लेते हैं। -तुम्हारा भुली झकरुवा

चिन्ता

अन्तिम सांसें लेते शौकाओं के कुटीर उद्योग

—जगदीश बृजवाल

सदियों से शौका व्यापारी बृहद रुप में व्यापार करने के साथ-साथ कुटीर उद्योग का सृजन अपने घरों में भी करते थे। शौका महिलाओं का इस क्षेत्र में कार्यकुशलता का कोई सानी न थी। विभिन्न प्रकार के उत्पाद ऊनी वस्त्र, वस्तुएं कुशल कारीगरी के साथ घरों पर ही निर्माण किया जाता था। पुरुष-महिला के अपने-अपने कार्यकुशलता, आत्म निर्भरता के साथ धन सम्पदा के बढ़ोत्तरी एश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करना स्वाभाविक है जिस कारण खूब हट्टे-कट्टे राराबोगडियार में आपसी लड़ाई-झगड़ा ताकत अजमाइश की कहानी भी चिरतार्थ है। सामाजिक ताना-बाना बिनने में भी जोहारी अग्रणी थे। सामाजिक, आर्थिक सुरक्षा से जो भी सहयोगी इनसे जुड़े थे अवश्य सभी निसफिक्रता से जीवन यापन करते रहे..किन्तु सांस्कृतिक व सामाजिक परिवर्तन पुरापाषाणकाल से आज तक निरन्तर जारी है।

चीन का भारत पर आक्रमण के पश्चात शौकाओं का व्यापार सदैव के लिए बन्द हो गया था। अफरातफरी के माहौल में अब वे एक जगह स्थाई रहने लगे तथा नये रोजगार के तलाश में इधर -उधर भटकने रहे। जमीन जायदाद बन्दोबस्त के चलते जोतदार के हवाले हो गया था। बस एक मात्र सहारा पशुपालन व कुटीर उद्योग थोड़ी बहुत अवशेष था। सरकार ने पशुपालन हेतु जंगलों में भी पावन्द लगा दिया, लोग इधर-उधर भी पलायन करने लगे, जहाँ भी लोगों को थोड़ी बहुत आजीविका का साधन मिला वहीं रहने लगे, गाँव के अधिकांश लोग ऊनी कारोबार व मेहनत मजदूरी कर अपने परिवार का भरण -पोषण करने लगे थे शौकाओं का संक्रमण काल यही था।

साठ-सत्तर के दशक में जब युवाओं ने शिक्षा ग्रहण करना प्रारम्भ किया तथा संविधानिक आरक्षण व्यवस्था के चलते नौकरीयां प्राप्त करने लगे थे तब आज देश के कौने-कौने तक जा बस गये हैं।

पैतृक कारोबार कुटीर उद्योग छूटते रहा, सरकार द्वारा जरूरत के अनुरूप सहयोग प्रोत्साहित कभी नही किया, शौकाओं के कुटीर उद्योग का आधुनिकीकरण नहीं हुआ तथा तब समाज के प्रबुद्ध जनों द्वारा भी उद्योग के विकासोन्मुख पर ध्यान नहीं दिया गया होगा, जिससे बिना मुनाफे के धन्धे को लोगों ने त्यागना उचित समझा। जमाना वह भी अवश्य होगा, जब शौकाओं के गृह निर्माण, कुटीर उद्योगों के उत्पादों की अवश्य तूती बोलती होगी। उनके यंत्र- चाहे दन बनाने का रांच 'फ्रेम' हो या ताना-बाना के बीच में एक मुखी तागा फंसाने वाला छिद्र बे, छिजू हो या किर्पा, चर्खा हो या उसका पहिया, बाना को बराबरी तक ठेसने वाला एक हाथ से चलाने वाला पंजा, छोटा सा घुमावदार चक्कू व धार देने वाली नदी किनारे का चिकना पत्थर, रंग-बिरंगी धागों के बीच बनाये जाने वाला वस्त्र पर उन शौका महिलाओं की पारखी नजर, अपने कारोबार के प्रति बातचीत करना, आज भी स्मृति पटल पर ताजा है। उनकी कार्यदक्षता, चपलता, बातें जरूर मन को द्रवित कर देता है। इस विषय में शौका महिलाओं की जितनी तारीफ करेंगे कम ही है।

व्यापार बन्द के पश्चात एकमात्र उत्पाद बिक्री हेतु ऐतिहासिक मेले-जौलजीबी, थल, बागेश्वर ही शौकाओ की आशाएं थी। सभी शौका व्यापारी गाँव घरों से अपने उत्पादों को घोड़े-खच्चर के पीठ पर लादकर मेलों में दुकान लगाते थे। गाँव के एक-दो व्यापारी गाँव के लोगों का सामाग्री लेकर मेले में पहुँचते थे। लोग अपने वस्तु के बिक्री की सीमा तय कर देते नफा नुकसान व्यापारी का रहता था, लोग बहुत उम्मीदें लगाए बैठे रहते, क्योंकि उसी धन से घर का भरण-पोषण का सहारा मिलता था।

महिनों दिनों बाद मेले से जब व्यापारी गाँव वापस आता तो लोग बड़ी आशाओं के साथ व्यापारी से मिलते थे कभी कभार किसी के वस्तु बिक्री न होने की दशा में घोर निराशा उस व्यक्ति के मन में रह जाती, जिसका सामान बिक जाता उनकी खुशी का ठिकाना न रहता था।

धीरे -धीरे शौकाओ का कारोबार आधुनिकता के दौर से प्रतिस्पर्धा न कर पाया, बचे खुचे लोग भी अपने कुटीर उद्योग से मुंह मोड़ने लगे।

आज के शौकाओ के गाँव में कुटीर उद्योग से जुड़े लोग ढूंढने पर भी नहीं मिलेंगे, पुराने बुजर्ग पुरूष-महिलाओं की संख्या कम हो चुका है, नयी पीढ़ी ने कभी इसे ग्रहण करना मुनासिब न समझा। जिस कारण संस्कृति की एक पहिचान धूमिल होने के साथ कुटीर उद्योग अन्तिम सांसें लेते दिख रहा है।

(यह लेख मन की सोच, उदगार कल्पना है। किसी को आहत करना नहीं है। -लेखक)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इन्टरनेट

मनोविज्ञान और प्रौद्योगिकी दिमाग एवं डिजिटल दुनिया के बीच का खजाना

डॉ.भारत पाण्डेय

मनुष्य का मन और तकनीकी प्रगति के बीच एक गहरा सम्बन्ध हमेशा से रहा है। यह सम्बन्ध आज के युग में और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, जहाँ प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन के हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ दी है। अब हमारी आधुनिक दुनिया डिजिटल हो गई है, और इसका असर हमारे मानसिक स्वास्थ्य और मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर सीधा पड़ता है।

इन्टरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, गेम्स और अन्य तकनीकी उपकरणों के विकास ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को बदल दिया है। सामाजिक मीडिया के उपयोग के कारण, मानसिक स्वास्थ्य पर गम्भीर प्रभाव पड़ रहे हैं। लोगों का ध्यान बचाने की क्षमता कम हो रही है, और ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता खो रही है। यह अनियंत्रित इंटरनेट उपयोग के चलते ध्यानाभाव विकार को बढ़ावा देता है। साथ ही, गेम और समय-समय पर इन्टरनेट पर अनुचित सामग्री देखने का आदान-प्रदान मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। यह भी सम्भव है कि लोग अधिक मात्रा में स्क्रीन के सामने बिताएं, जिससे उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लम्बी समय तक बैठे रहना, कम शारीरिक गतिविधि, नियमित आहार की कमी, और अन्य कारकों के कारण स्थूलता, मोटापा और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

इसके विपरीत प्रौद्योगिकी हमारे मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में भी मदद कर सकती है। एक गठनशील और अभिनव उपयोग के साथ, इंटरनेट, स्मार्ट फोन के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धित जानकारी, संगठन टूल, मनोरंजन, और मनोवैज्ञानिक अभ्यासों की विभिन्न सेवाएं उपलब्ध होती हैं। मनोविज्ञान और प्रौद्योगिकी का संयोग हमें नई और सुगमता से उपलब्ध होने वाली मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में मदद कर सकता है। सोशल मीडिया पर अतिरिक्त वक्त बिताने से लोग अक्सर अपनी खुद की तुलना में दूसरों के साथ अधिक तुलना करते हैं, जो मानसिक दबाव पैदा कर सकता है। इन्टरनेट की वजह से लोग अक्सर अपने शारीरिक और सामाजिक पर्यवेक्षण को भूल जाते हैं और इसके बजाय आशा, असन्तोष और तनाव की स्थिति में जीने लगते हैं। ऐसे मामलों में इन्टरनेट का उपयोग सीमित रखना और नियमित ध्यान अभ्यास करना महत्वपूर्ण हो सकता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखें तो इन्टरनेट एक उपयोगी साधन हो सकता है। इंटरनेट के माध्यम से हम धार्मिक ज्ञान, आध्यात्मिक साहित्य, पूजा-अर्चना के विधान आदि के बारे में जान सकते हैं। इसके अलावा, आध्यात्मिक गुरुओं की उपदेशों, सत्संगों और ध्यान के तकनीकों को सीखा जा सकता है। इससे हम आपसी आध्यात्मिक सम्पर्क बना सकते हैं और एक आध्यात्मिक समुदाय के सदस्यों के साथ सम्वाद कर सकते हैं। इससे हमारा आध्यात्मिक ग्रोथ हो सकता है और हम अपनी साधना को आगे बढ़ा सकते हैं। तो आपसे अनुरोध है कि इन्टरनेट के सकारात्मक और आध्यात्मिक उपयोग को बढ़ावा दें और इसे सन्तुलित रखें ताकि हम इन्टरनेट का सही तरीके से उपयोग कर सकें।

सावन की ऋतु

बादल गरजे, बादल बरसे,
मेघ गगन से झरझर बरसे।
पवन हठीला सन-सन बहता,
सारा तन-मन गीला कर जाता।
साजन बिन तो जियरा तरसे,
बादल गरजे, बादल बरसे।
बहता पानी थम नहीं पाता,
एकाकी मन ठहर न पाता।
छलक रहा जल ख्रग-अम्बर से,
मेघ गगन से झरझर बरसे।
पाती साजन की ना आई
आंखें बिरहन की पथराई,
छूटा जाता प्राण भी तन से,
मेघ गगन से झरझर बरसे ।
कौन बंटाए भाव वेदना के,
कौन सहलाये घाव हृदय के।
भाग्य गया है रूठ अपने से,
मेघ गगन से झरझर बरसे।
ताजे हुए हृदय के छाले,
दर्द इतना कि नैन भर आये।
नयना प्रिय की आस में तरसे,
बादल बरसे नील गगन से।
कामना के मेघ मंडराये,
बरखा आई, प्रिय नहीं आये।
यह दुखड़ा रोयें किस-किस से
मेघ गगन से झरझर बरसे।
भीगा मौसम आंखें पथराई,
विरहन पर यह पीड़ा छाई।
किसे दुलरायें, जूझें किस-किस से
बादल बरसे नील गगन से ।
ऋतु वर्षा की कैसी आई,
ठण्डी हवा पर अगन है लाई।
मन के भाव कहें अब किससे,
मेघ गगन से झरझर बरसे।
कैसा यह पावस है रसीला,
मेदनी का गात है गीला।
दाह थमी ना बरखा ऋतु से,
बादल गरजे, बादल बरसे।
मेघ गगन से झरझर बरसे।
नील गगन से झरझर बरसे।
बादल बरसे,बादल गरजे,बादल बरसे।

-कौस्तुभ आनन्द चन्दोला
सदस्य उत्तराखण्ड भाषा संस्थान

द्रुपद की कन्या

द्रुपद की थी कन्या
द्रौपदी थी कहलायी
हवन-अग्नि से उत्पन्न हुई
अग्नि की थी जाई
ओज तेज की पराकाष्ठा
उसमें थी समाई
पर यह विडम्बना कैसी
मुझे समझ ना आयी ।
एक से था हुआ स्वयम्बर
फिर भी पत्नी पाँच की कहलायी,
कृष्ण की वो सखी, पांडवो की वो रानी
दर-दर भटकी वन में
पर साँच को आँच नहीं आयी
कैसा खेल रचना विधाता ने
पांडव इतने बेबस और लाचार हुऐ
धृत में हारा पत्नी को
अन्याय का शिकार हुऐ ।
पर स्वाभिमानी रानी ने
फिर भी हार ना मानी
अपनी गर्जना से कौरवों को चेताया
फिर भी ना माना दुशासन
चीर-हरन को आया।
धिक्कार दी पाण्डवो को
जो पत्नी को दांव पर लगाते हैं
और सभा का नजारा देख
बेबस आँसू बहाते हैं
पर कुछ कर नहीं पाते हैं।
अन्त में हार कर दौपदी ने
श्री कृष्ण को याद किया
सखी की लाज बचा मोहन ने
उसका उद्धार किया ।
शपथ ली तब द्रुपद कन्या ने
कौरवों का मैं नाश करूंगी
उनके रक्त से ही अपने
केशों का श्रृंगार करूंगी ।
महाभारत के युद्ध का
द्रौपदी भी एक कारण बनी।
आज की नारी भी तो
दौपदी की परछाई है
अपने स्वाभिमान की खातिर
कौरवों से की लडाई है ।।

-रेनू कपूर
गाजियाबाद

ज्योतिष की बातें - 136

25 जुलाई 2023 को बुध शत्रुराशि से निकलकर मित्रराशि सिंह में प्रवेश करेगा । वहाँ पर वक्री, मार्गी, अस्त, उदय होते होते हुए, सामान्य से अधिक, 68 दिन सिंह राशि में रहेगा । इस अवधि में कभी-कभी मंगल, शुक्र अथवा सूर्य से युति भी करेगा अतः मंगल अपने स्वतन्त्र गुणों को न देकर कभी मंगल, कभी शुक्र तो कभी सूर्य के गुणों को प्रकट करेगा । साथ ही गुरु व शनि की दृष्टि भी बुध पर रहेगी इसलिए बुध मिश्रित प्रकार का शुभफल प्रदान करेगा । फलदीपिका के अनुसार बुध दूसरे, चौथे, छठवें, आठवें, दसवें व ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है । अतः अगले 68 दिन बुद्धि, व्यापार, साहित्य आदि अपने कारक विषयों में बुध न्यूनाधिक रूप से कर्क, वृषभ, मीन, मकर, वृश्चिक व तुला राशि के जातकों को शुभ फल प्रदान करेगा ।

पद्मिनी एकादशी- श्रावण अधिकमास शुक्ल पक्ष एकादशी तदनुसार शनिवार, 29 जुलाई 2023 को पद्मिनी एकादशी का व्रत रहेगा । अधिक मास अर्थात् पुरुषोत्तम मास की दोनों एकादशियों का महत्व विशेष होता है अतः इन दोनों एकादशियों का व्रत अवश्य रखना चाहिए ।

शुभं भवतु !

ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक विचार- 27

गौशाला अर्थात गायों की जेल

आजकल गोमाता की सेवा करने का उत्साह जनता में बहुत है। जगह-जगह गौशालाओं का निर्माण हो रहा है। बड़े-बड़े आश्रमों में गौशाला अवश्य होती है। इन गौशालाओं में भवन निर्माण होता है। जंगल को साफ करके सीमेंट कंक्रीट के भवन खड़े किए जाते हैं। सभी सुविधाओं से युक्त महलों का निर्माण होता है। बाजार से खरीदकर गायों को आहार दिया जाता है। गोदुग्ध के साथ साथ गोबर और गोमूत्र से औषधियाँ आदि भी बनाई जाती हैं। यह सब देखने सुनने में अच्छा लगता है लेकिन वास्तव में यह अच्छा है नहीं।

यदि कुछ आदमियों को बहुत बड़े हॉल में हमेशा के लिए बन्द कर दिया जाए तो कैसा लगेगा? गौशालाओं में गायों को उनका मनपसन्द चारा नहीं मिलता है, मालिक जो खिलाए, वही खाना पड़ता है। गायों को एक निश्चित स्थान पर ही रहना पड़ता है स्वतन्त्र विचरण का अवसर प्राप्त नहीं होता है। यहाँ तक की स्वतन्त्र रूप से शारीरिक सुख की भी प्राप्ति नहीं हो पाती है, मालिक की इच्छा पर निर्भर रहना पड़ता है। आहार विहार मनोनुकूल न होने के कारण गौशाला में गायें प्रायः बीमार रहती हैं। उनका इलाज भी प्राकृतिक तरीके से न होकर एलोपैथिक तरीके से होता है, जिस कारण गायें हमेशा बीमार बनी रहती हैं और कई बार तो बहुत बड़ी संख्या में गायों की मरने की खबर भी आ जाती है। अधिकतर गौशालाओं में गायों के प्रति प्रेम का व्यवहार नहीं होकर क्रूरता का व्यवहार होता है ।

वास्तव में गायों को गौशाला की आवश्यकता नहीं है बल्कि गायों को गोचर भूमि चाहिए। गायों के स्वतन्त्र विचरण के स्थानों पर मनुष्यों ने जो कालोनियाँ बना ली हैं उनसे गोचरभूमि मुक्त होनी चाहिए। धर्मशास्त्रों के अनुसार गोमाता को बन्धन में रखना पाप माना गया है।

-सरल

ओऽहोऽरे.........

कुमाउंनी-गढ़वाली के साथ जापानी पढ़ेंगे बल

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में कई तरह-तरह की योजना, आदेश, निर्देश सुनाई देते रहे हैं। दूरस्थ शिक्षा के इस केन्द्र को लेकर विद्यार्थियों की भीड़ बढ़ी है लेकिन इसके डोलन पर सवाल भी उठते रहे हैं। अब सुनने में आ रहा है कि कुमाउंनी-गढ़वाली के साथ जापानी भी पढ़ाई जाएगी।

बताते चलें कि कुमाउंनी-गढ़वाली को लेकर पहले ही तैयारी हो चुकी थी लेकिन पड़ताल पर पता चला कि विद्यार्थी रुचि नहीं ले रहे हैं। अपनी दुदबोली को बढ़ावा देने के तमाम आयोजन आये दिन होते रहते हैं। ऐसे में उमुविवि के कदम को सराहनीय कहा जाएगा लेकिन जिन्होंने सीखना-पढ़ना है, उनकी संख्या न्यून रही। अब जापानी का मामला है....

बताया जा रहा है कि नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद स्नातक स्तर पर भाषा विषय की पढ़ाई अनिवार्य कर दी गई है। इसे योग्यता सम्वर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया गया है। बीए, बीएससी, बीकॉम के विद्यार्थियों को अपने पाठ्यक्रमों के साथ एक भाषा विषय भी चुनना होगा। इसमें कुमाउंनी और गढ़वाली के साथ विदेशी भाषा के रूप में जापानी का विकल्प भी मिलेगा। स्नातक स्तर पर नई शिक्षा नीति लागू करते हुए सेमेस्टर प्रणाली प्रारम्भ हो रही है, ऐसे में विद्यार्थियों को स्नातक प्रथम सेमेस्टर में छह विषय पढ़ने होंगे, जिनमें तीन संकाय सम्बन्धित, एक अन्य पसंदीदा विषय के अलावा एक-एक भाषा और कौशल विकास कोर्स चयन करना होगा।

योग्यता सम्वर्धन कोर्स में दिये गये विकल्प में- संस्कृत भाषा एवं साहित्य, कुमाउंनी भाषा साहित्य, गढ़वाली भाषा साहित्य, नेपाली भाषा, जापानी भाषा साहित्य, हिन्दी व्याकरण पत्र लेखन एवं निबन्ध, व्यापारिक संचार हैं। एनईपी पाठ्यक्रम के तहत भाषा कोर्स में पचास नम्बर की परीक्षा होगी। सात कोर्सों के विकल्प से अपने अनुरूप विषय का चयन करने के बाद विद्यार्थी उन्हें पढ़ सकेंगे। विश्वविद्यालय के अधिकारियों के अनुसार विद्यार्थियों को सत्रीय कार्य (असाइनमेंट) में भी छूट होगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गर्जिया मंदिर टीले में दरार, सर्वे होगा

फड़ों की लम्बी कतार देख मन खिन्न है

रामनगर/नैनीताल। प्रसिद्ध गर्जिया मन्दिर के टीले में दरार बढ़ने की बात कही जा रही है और इसके लिये आपदा प्रबन्धन की तकनीकी टीम सर्वे करेगी। इसके अलावा मन्दिर क्षेत्र में लगने वाले बेहिसाब फड़ों से श्रद्धालुओं में खिन्नता है।

बताते चलें कि जिस गर्जिया मन्दिर के दर्शन और प्रकृति का नजारा देखने लोग दूर-दराज से आते हैं, उन्हें नदी में मन्दिर के पास बेहिसाब फड़ों के कारण दिक्कत होती है। पहले से जहाँ गिनती भर की दुकानें होने से लोगों को प्रकृति का खूबसूरत नजारा भी दिखाई देता था अब फड़ों की भीड़ में वह सौन्दर्य नहीं है। क्षेत्र में बाहर से बड़ी संख्या में दुकान लगाने के लिये आने वालों को कोई रोक-टोक नहीं है। यात्रा सीजन में यहाँ श्रद्धालुओं की संख्या बहुत बढ़ जाती है लेकिन फड़ों की दो ओर लगने वाली लम्बी कतार नदी क्षेत्र के सौन्दर्य पर धब्बा सा दिखाई देती है।

अब बात करते हैं मन्दिर के टीले की, इसमें दरार बढ़ चुकी है। पिछली बार भी सिंचाई विभाग ने टीले को तिरपाल से ढका था। वर्ष 2021 में दरार की सूचना पर आईआईटी रुड़की के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ.यतेन्द्र मित्तल के निर्देशन में दल ने गर्जिया मन्दिर का सर्वे किया था। यह प्रस्ताव अभी तक भी मंजूर नहीं हो पाया है। अब दोबारा से प्रस्तावा तैयार किया जा रहा है। सिंचाई विभाग के सीई संजय शुक्ल ने बताया कि बचाव के लिये 9.3 करोड़ की डीपीआर बनाकर शासन को भेजी है। शासन ने डीपीआर का प्रस्तुतीकरण भी किया जा चुका है। जल्द ही आपदा प्रबन्धन की तकनीकी कमेटी की टीम गार्जिया पहुँचकर सर्वे करेगी। सिंचाई विभाग के एई श्री मित्तल ने बताया है कि गर्जिया मन्दिर के टीले के चारों ओर तिरपाल लगाया गया था लेकिन जून में आई आंधी से तिरपाल कट गया। जिसे पुन: तिरपाल से ढका गया। टीले के चारों ओर पत्थरों का जाल से बिछाया गया है।

१६२ बच्चों ने आनलाइन प्रतिभाग किया

पहेली लेखन कार्यशाला

अल्मोड़ा। बच्चों की पत्रिका बालप्रहरी तथा बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा आयोजित 700 वे आनलाइन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उत्तराखण्ड शिक्षा विभाग के उप निदेशक आकाश सारस्वत ने कहा कि बच्चे अपने स्तर से छोटे-छोटे रचनात्मक कार्य करें। इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित किए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बच्चों में रचनात्मक कार्य करने की ललक होती है। बस उन्हें अवसर दिए जाने की जरूरत है। उन्होंने बालप्रहरी मंच के बारे में बताया कि कक्षा 1 से लेकर कक्षा 12 तक के बच्चों को एक मंच पर अभिव्यक्ति का अवसर देने की दिशा में आयोजकों के प्रयास की सराहना की जानी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व आयकर आयुक्त श्यामपलट पाण्डेय ने कहा कि बालप्रहरी कार्यशालाएं जहाँ बच्चों को कहानी, कविता, निबन्ध, यात्रा वृतांत, आत्मक कथा आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं से जोड़ती हैं वहीं गैर हिन्दी भाषी बच्चों को हिन्दी बोलने का मंच प्रदान करती हैं। उन्होंने कहा कि बच्चे जहां अपनी लोक संस्कृति से जुड़ रहे हैं वहीं समय-समय पर देश भक्ति गीत आदि कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चे देश भक्ति, सामाजिक सरोकारों तथा मानवीय मूल्यों से भी परिचित हो रहे हैं।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान खंडवा, मध्य प्रदेश के प्रवक्ता डा. अशोक कुमार नेगी ने कहा कि बालप्रहरी की आनलाइन कार्यशालाओं में बच्चों के साथ ही अभिभावकों तथा बालसाहित्यकारों को भी अभिव्यक्ति का अवसर मिल रहा है। सविता वैश्य ने कहा कि वह तथा उनके बच्चे बालप्रहरी की पिछली लगभग 200 कार्यक्रमों से आनलाइन लगातार जुड़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस पटल पर बच्चे एक दूसरे राज्यों के बच्चों से आपस में जुड़ रहे हैं तथा एक दूसरे की संस्कृति को समझ रहे हैं। 700 वें आनलाईन कार्यक्रम के प्रारम्भ में सभी का स्वागत करते हुए बालप्रहरी के सम्पादक उदय किरौला ने बताया कि बालप्रहरी पटल पर भारत के 16 राज्यों के लगभग 2100 बच्चे जुड़े हैं। जिनमें से लगभग 500 बच्चे अभी तक संचालन कर चुके हैं। लगभग 1500 बच्चे बतौर अध्यक्ष, 300 बच्चे विशिष्ट अतिथि बतौर अपनी अभिव्यद्रि दे चुके हैं।

बलियानाला क्षेत्र में खतरा, कैंची के पास मलबा

नैनीताल। बलियानाला क्षेत्र में लगातार हो रहे भूस्खलन से खतरा है। जिला प्रशासन ने खतरा देखते हुए बलियानाला क्षेत्र का निरीक्षण किया और हरिनगर क्षेत्र में रह रहे लोगों के आवास खाली करवा दिये हैं। कहा है कि बरसात के दिनों में सभी सुरक्षित स्थान पर रहें। उप जिलाधिकारी राहुल शाह ने बताया है कि मानसून के दौरान होने वाले भूस्खलन से क्षेत्र के लोगों को बचाए जाने को लेकर विस्थापित किया गया है। खतरे की जद में आए परिवारों को पूर्व में जिला प्रशासन और नगर पालिका ने करीब 120 से अधिक परिवारों को नोटिस जारी कर घर खाली करने का आदेश दिया था। इनके लिये जीआईसी व अन्य स्कूलों में व्यवस्था की गई है।

दूसरी ओर कैंची धाम के पास हाईवे में मलबा आने से यातायात प्रभावित हो रहा है। ऐसे में अल्मोड़ा जाने वाले वाहनों को वाया रामगढ़ होते हुए भेजा जा रहा है। भवाली सहित कई स्थानों पर बरसात से यातायात बाधित हुआ। नगर के ताकुला क्षेत्र में हल्द्वानी-नैनीताल मार्ग पर पहाड़ी से सड़क पर मलबा आने से दिक्कत हो रही है। धारी ब्लाक के पोखराड़ में तेज बारिश से काफी मलबा लोगों के घरों व खेतों में आ गया है। यहाँ करीब 40 मकानों को खतरा बना हुआ है। हल्द्वानी शहर में जलभराव की समस्या बनी हुई है।

लोहाघाट और बाराकोट में प्रदर्शन

मांगो को लेकर मुखर हैं

लोहाघाट। विकास खण्ड लोहाघाट और विकास खण्ड बाराकोट में अपनी मांगों को लेकर ग्रामीणों ने जोरदार प्रदर्शन किया है। चौड़ाढेक-सुंई शिव मन्दिर मोटर मार्ग की बदहाली पर ग्रामणों ने रोष जताते हुए चेतावनी दी है कि यदि शीघ्र ही यह सड़क सुधार नहीं हुआ तो उग्र आन्दोलन करेंगे। ग्राम प्रधान भुवन चौबे के नेतृत्व में ग्रामीणों ने यह प्रदर्शन किया। कहा कि 5 किमी लम्बे इस मोटर मार्ग पर कई वर्षों बदहाली है, जगह-जगह गड्ढे होने से खतरा बना हुआ है। सड़क किनारे स्कबर नालियां बन्द पड़ी हैं। बरसात के दिनों में खतरा और ज्यादा बढ़ जाता है। प्रदर्शनकारियों में किशोर पुजारी, सुधीर चतुर्वेदी, तारा दत्त, नवीन चन्द्र, विजय सिंह, मनोज चौबे, नवीन चौबे, रमेश जोशी, नवीन चन्द्र, विजय सिंह मौजूद थे।

विकासखण्ड बाराकोट में अतिथि विश्राम गृह बनाने सहित आठ सूत्रीय मांगों को लेकर क्षेत्रवासियों ने प्रदर्शन किया। शीघ्र मांग पूरी न होने पर लोकसभा चुनाव बहिष्कार की चेतावनी दी है। ज्येष्ठ उपप्रमुख नन्दाबल्लभ बगौली के नेतृत्व में प्रदर्शनकारियों ने कहा कि अतिथि गृह निर्माण, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का उच्चीकरण, तहसील में आवासीय भवनों का निर्माण, बन्द पड़ी आईटीआई का पुन: संचालन, प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने, बाराकोट में डिग्री कालेज खोलने, ब्लाक की सभी कच्ची सड़कों के डामरीकरण, बाराकोट में एसडीएम का पद स्वीकृत करने और स्थायी तहसीलदार की नियुक्ति की जाए। मांगें पूरी न होने पर चरणबद्ध आन्दोलन शुरु हो जाएगा। प्रदर्शनकारियों में व्यापार मण्डल अध्यक्ष संजय वर्मा, सुनील वर्मा, प्रकाश सिंह, त्रिलोक सिंह, ओम प्रकाश, नारायण राम, कैलाश सिंह थे।

रुद्रपुर में फैली है अनैतिक धन्धेबाजी

मालिक पकड़ा

रुद्रपुर। महानगर में लम्बे समय से अनैतिक धन्धेबाजी फैली हुई है। इसमें स्कूल पढ़ने वाले युवक-युवतियां फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर लेते हैं। पुलिस की सख्त कार्रवाई के बाद भी कई जगह इस प्रकार की धन्धेबाजी की सूचनाएं मिलती जा रही है। ताजा प्रकरण में एक होटल मालिक-प्रबन्धक सहित 5 की गिरफ्तारी हुई है। रविन्द्रनगर स्थित एसडीआर होटल में भी इस प्रकार के अनैतिक कार्य चल रहे थे। पुलिस ने जिन लोगों को पकड़ा उनमें तीन नाबालिक भी थे, जिन्हें उनके परिजनों को सौंप दिया गया है। धोबीघाट स्थित इस होटल में गड़बड़ की सूचना पर पुलिस ने छापा मारा। मुखर्जीनगर नई दिल्ली हाल निवासी एसडीआर होटल रविन्द्रनगर आरेन्द्र कुमार, होटल संचालक ग्राम जलना लमगड़ा अल्मोड़ा निवासी जगदीश उर्फ जग्गू, उत्तम सरकार निवासी शिवनगर खेड़ा, विपिन मौर्य ग्राम कड़ाई बंड शाहजहांपुर हाल निवासी शिवनगर खेड़ा और इस्लाम मियां उर्फ राजा निवासी प्रीत नगर मलसी बगवाड़ा के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज हुई है। बताया जा रहा है कि अनैतिक कार्य के लिये युवाओं को निशाना बनाया जा रहा था। आरोप है कि स्कूल ड्रेस में नाबालिक आते हैं। पकड़ में आने पर कहा उन्हें बहला कर लाया गया है।

उत्तराखण्ड में वर्षा से भारी क्षति

इस बार की वर्षा में प्रदेश में भारी क्षति हुई है। मूसलाधार बरसात से चमोली में बरसाती नाले में आए उफान के कारण पुल बहने से चीन सीमा से सम्पर्क कट गया। अतिवृष्टि से उफनाया बरसाती नाला मलारी हाईवे पर बना आरसीसी पुल बहा ले गया। इससे चीन सीमा के साथ द्रोणागिरी, जेलम, कागा, मलारी, कोषा, कैलाशपुर, बम्पा, गमसाली, नीती आदि गाँवों का सम्पर्क कट गया। प्रदेश में 18 लोगों की मौत हो चुकी है जबकि 4 लापता की ढूंढ जारी है। उत्तरकाशी जिला सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ है। गंगोत्री दर्शन कर उत्तरकाशी लौट रहे तीर्थयात्रियों को मौसम की मार सहनी पड़ी। रुद्रप्रयाग जिले में गुप्तकाशी से केदारनाथ जा रहे यूपी के दो बाइक सवार पत्थर की चपेट में आ गए जिसमें से एक की तत्काल मौत हो गई। कोटद्वार में पुल टूटने से आफत मची।

मूसलाधार वर्षा से चारधाम यात्रा मार्ग में दिक्कत है। कंचनगंगा में बदरीनाथ हाईवे का 12 मीटर हिस्सा बह गया, जिसे मरम्मर कर खोला गया। मौसम से मची आफत को देखते हुए चारधाम यात्रा को बीच-बीच में रोका जा रहा है। मार्ग में फंसे यात्रियों को सुरक्षित रहने के लिये कहा गया है। हरिद्वार में बेहिसाब जलभराव होने से दिक्कतों का सामना करना पड़ा है।

परिक्रमा

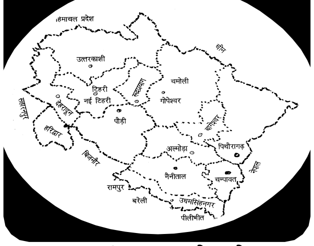

सीमान्त से लेकर तराई तक आफत

वर्षा की अति के कारण सीमान्त से लेकर तराई तक आफत मच चुकी है। सीमान्त में सर्वाधिक तबाही देखने को मिल रही है। धारचूला में एनएचपीसी की धौलीगंगा जल विद्युत परियोजना के बांध का पानी छोड़े जाने से काली नदी ज्यादा ही खतरनाक हो गई। इस कारण धारचूला के खोतिला में दो मकान नदी में समा गए। यहाँ 15 परिवारों को सुरक्षित स्थान पर शिफ्ट कर दिया गया है। टनकपुर-तवाघाट हाईवे पर धारचूला से तवाघाट के बीच दोबाट सहित दो स्थान पर बोल्डर गिरने से मार्ग खतरनाक बना हुआ है। मुनस्यारी-धापा-लीलम सड़क मलबा आने से भरी है। गोल्फा गाँव में भूस्खलन जारी है। चम्पावत जिले की आलबेदर रोड में अमोड़ी और स्वाला में लगातार मलबा आने से खतरा बना हुआ है। पूर्णागिरी मार्ग भी इन दिनों में खतरा है। टनकपुर के आसपास किरोड़ा नाला सहित सभी खतरनाक रुख में दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में में यात्रा से बचा जाए तो बेहतर है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ठेले हटाने पर चुनाव बहिष्कार की चेतावनी दी

एडीएम को ज्ञापन सौंपा

काशीपुर। टांडा तिराहा से ठेले हटाने के विरोध में ठेला व फड़ व्यापारियों ने निकाय व लोकसभा चुनाव के बहिष्कार की चेतावनी दी है। उन्होंने मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम के माध्यम से सौंपा है। न्यू आजाद ठेला खोखा यूनियन के अध्यक्ष इलियास माही गीर, कांग्रेस नेता एम.ए.राहुल के नेतृत्व में व्यापारियों ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने कहा कि काशीपुर में करीब बीस वर्ष पूर्व टांडा तिराहा से अलीगंज की ओर जाने वाली सड़क के किनारे फल, सब्जी आदि के ठेले लगाने की अनुमति दी थी। तब वहाँ ठेले लगाकर परिवार की गुजर-बसर करते आ रहे हैं लेकिन अब अतिक्रमण के नाम पर प्रशासन सख्ती कर रहा है।

जाँच न होने पर भाकियू ने दी आन्दोलन की चेतावनी

जसपुर। अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान तोड़े गये मकानों व दुकानों के मामले में जाँच पूरी न होने पर भाकियू ने आन्दोलन की चेतावनी दी है। युवा भाकियू के ब्लाक अध्यक्ष अमनप्रीत सिंह ने कहा कि प्रभावित लोगों ने 7 जुलाई को भाकियू प्रदेश अध्यक्ष कर्म सिंह के नेतृत्व में डीएम से मिलकर न्याय दिलाने व पुनर्वास की मांग की थी और एसडीएम से भी मिले लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई न होना दुर्भाय है। पीड़ित परिवारों को न्याय मिलना चाहिये।

लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा-कांग्रेस की तैयारी

राहुल गांधी की पदयात्रा के लिये उत्साहित

भाजपा के बड़े नेताओं को सक्रिय कर दिया है

पि.हि. प्रतिनिधि

लोकसभा चुनाव की तारीख में अभी समय है लेकिन उत्तराखण्ड में माहौल बनाने के लिये कांग्रेस-भाजपा जुटे हैं। कांग्रेसी राहुल-प्रियंका के दौरे को लेकर बेहद उत्साह है। कमजोर कांग्रेस को ताकत दिलाने के लिये बड़े नेताओं के दौरे से आश लग रही है। दूसरी ओर भाजपा के बड़े नेताओं को सक्रिय कर दिया गया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की दिन-रात दौड़ और पार्टी के शीर्ष से मिले आशीर्वाद से यह तो स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि सीएम के रूप में उनके नेतृत्व को पसन्द किया जा रहा है। सभी प्रभारी मंत्रियों को उनके क्षेत्र में रहकर कार्य करने को कहा गया है। इसके अलावा सांसद एकदम सक्रिय मोड पर हैं। बावजूद माना जा रहा है कि पुराने चेहरों के अलावा दो सीटों पर प्रत्याशी नये चेहरे होंगे। बीच-बीच में चर्चा फैल रही है कि कांग्रेस का बड़ा चेहरा भाजपा में शामिल होने जा रहा है।

फिलहाल भाजपामयी बने उत्तराखण्ड में राहुल गांधी के आने से कार्यकर्ताओं में उत्साह होगा और तभी चुनाव में कांटे की टक्कर दिखाई देगी। बताया जा रहा है कि राहुल गांधी प्रस्तावित स्वाभिमान न्याय यात्रा में भाग लेंगे। पार्टी की यह यात्रा अग्निवीर योजना के विरोध को केन्द्र में रखकर निकाली जाएगी। दो माह की इस यात्रा में राहुल गांधी दस दिन तक भाग लेंगे। दिल्ली में हुई कांग्रेस के शीर्ष नेताओं की बैठक के बाद उत्तराखण्ड के लिये नयी रणनीति तैयार की गई है। कहा गया है कि अब उत्तराखण्ड से ही पूरे देश को सन्देश दिया जायेगा।

कपकोट-भराड़ी : अधिकारियों का रुख समझो

निराश हो चुके हैं राज्य आन्दोलनकारी, न्याय की गुहार

पि.हि. प्रतिनिधि

बागेश्वर। जनपद बागेश्वर की राजनीति की आड़ के लिये कपकोट-भराड़ी का स्थान हमेशा पहला रहा है। कुर्सी चाहे किसी के पास रही हो, यहाँ के हर छोटे बड़े नेता का साया उसके आगे-पीछे जरूर दिखाई देता है। इतना होने के बाद भी विकास के लिये क्षेत्र तरस रहा है और उत्तराखण्ड आन्दोलन में अग्रणीय भूमिका निभाने वाले आन्दोलनकारी निराश हो चुके हैं। हाल यह हो चुका है कि एसडीएम सहित अन्य अधिकारी बच रहे हैं। विधायक को अधिकारियों का रुख समझना होगा आंखिर वे इस क्षेत्र में आने से क्यों बचना चाहते हैं। क्षेत्र के विकास के लिये तालमेल जरूरी है।

हिचौड़ी के राज्य आन्दोलनकारी विशन सिंह गड़िया अब भले ही नहीं रहे लेकिन उनका स्मरण कर आन्दोलन कारी न्याय की गुहार कर रहे हैं। भरत सिंह कहते हैं कि जिस उद्देश्य से पृथक राज्य को बनाया गया था उसे पूरा किया जाना चाहिये। उन्होंने कहा कि आन्दोलनकारी पेंशन की भूख नहीं रखते हैं, वह सम्मान चाहते हैं। जो लोग राज्य आन्दोलनकारी हैं, उन्हें उस बात का मान तो मिले।

अग्रणीय राज्यआन्दोलनकारी दान सिंह गड़िया ने इस बात पर आश्चर्य किया कि जो आन्दोलनकारी जेल गये उन्हें आज भी सम्मान नहीं दिया गया है जबकि आन्दोलन कारियों की सूची में ऐसे-ऐसे नाम हैं जो राज्य विरोधी रहे हैं।

गंगोलीहाट नगर पालिका पर कैसे किया जाए भरोसा?

सभासद ही विफर रहे हैं

गंगोलीहाट। नगर पालिका गंगोलीहाट पर आम जनता कैसे भरोसा करेगी जब इसके सभासद ही विफर रहे हैं। नगर पालिका की कार्यप्रणाली को लेकर इसके सभासदों का रोष कई बार देखने को मिला है। आंखिर ऐसा क्या है कि नगर पालिका चैयरमैन, सभासद और प्रशासक मिलकर नगर को नहीं संवार पा रहे हैं। ऐसे कौन से मद हैं जिनको लेकर मारामारी होती होगी और क्या कोई ऐसा मद भी है जिसको बड़े रोकड़े में दिया गया हो, इस प्रकार के सवाल भी जनता द्वारा उठाए जाने लगे हैं। नगर क्षेत्र की सफाई व्यवस्था को लेकर बार-बार सवाल उठाए जाते रहे हैं।

इस बीच पठक्यूड़ा वार्ड की सभासद कविता बिष्ट ने नगर पालिका पर विकास कार्यों में अनियमितता का आरोप लगाकर अपने पद से इस्तीफा दे डाला। उनका कहना है कि उनके वार्ड में अनियोजित तरीके से विबना सभासद को विश्वास में लिए कार्य किया जा रहा है। पालिका के ईओ को अपना इस्तीफा सौंपने वाली सभासद ने कहा कि पूर्व में पालिका की अनियमितताओं के चलते चार सभासदों ने सामूहिक इस्तीफा दिया था। इसके बाद बोर्ड की बैठक में तय हुआ था कि पालिका सभी सभासदों को विश्वास में लेकर काम करेगी। तब सामूहिक इस्तीफा वापस ले लिया गया था लेकिन पालिका अब फिर मनमाने तरीके से कार्य कर रही है। जिस कारण वह इस्तीफा दे रही हैं।

सभासद के इस्तीफे से यह तो सिद्ध हो ही रहा है कि पालिका में झाला है।

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

जीतेन्द्र सिंह रावत

कौसानी

पिघलता हिमालय स्थापना के ४६ वें वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं-

श्रीमती कोसी रावत

कौसानी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सावन की हरियाली चहुंओर समृद्धि लाए। हार्दिक शुभकामनाएं-

संजय पाठक
(श्री हरीश चन्द्र पाठक)
थोक एवं फुटकर विक्रेता
सिमगड़ी
धरमघर

नारायण सिंह पांगती
पुराना बाजार
थल

खम्पा
टूर एंड ट्रैवल्स
ग्वालदम

हरीश धानिक
'भीमा'
अध्यक्ष
व्यापार संघ
गंगोलीहाट

माँ काली ज्वैलर्स
रमेश लाल वर्मा
दन्या

Hotel
Bala Paradise
Tiksain,
Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

होटल माँ नन्दादेवी
एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल
एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hayat
Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

MARTOLIA
FURNITURE
A unit of Martolia
Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777,
7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन
वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA
LODGE
Family Guest House- Sarmoly,
Munsiyari
A Home Away From Home &
Home Stay
Phone: (05961) 222287

सप्ताह के पर्व

श्रावण शुक्ल पक्ष

21 जुलाई- विनायक चतुर्थी
29 जुलाई- एकादशी
30 जुलाई- प्रदोष
1 अगस्त- पूर्णिमा व्रत

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्स: (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)